

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित शोध-पत्र

श्रीमती पुनिता तिवारी^{1*}, डॉ. ममता शर्मा²

¹ पीएच.डी. शोधार्थी शिक्षा विभाग, आईईसी विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

² सह प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, आईईसी विश्वविद्यालय, बद्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *श्रीमती पुनिता तिवारी

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.21023855>

सारांश

यह शोध-पत्र सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन पहले से उपलब्ध जानकारी, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। व्यक्तित्व को समझने के लिए, हम आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक स्थिरता, सहयोग, अनुशासन, आत्मविश्वास और संचार कौशल जैसे पहलुओं पर ध्यान देते हैं। हमारे निष्कर्ष बताते हैं कि अगर मूक-बधिर विद्यार्थियों को सही संचार सहायता, समावेशी शिक्षा, परिवार का सहयोग और सकारात्मक साथियों का व्यवहार मिलता है, तो उनके व्यक्तित्व गुण सामान्य विद्यार्थियों के समान हो सकते हैं।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 16-02-2026
- Accepted: 23-03-2026
- Published: 30-03-2026
- MRR:4(3); 2026: 83-86
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

तिवारी पी, शर्मा एम. सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित शोध-पत्र। 2026. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(3):83-86.

Access this Article Online



www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व गुण, मूक-बधिर विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थी, आत्म-सम्मान, सामाजिक समायोजन, समावेशी शिक्षा।

1. प्रस्तावना

व्यक्तित्व हमारे व्यवहार, विचारों, भावनाओं और सामाजिक प्रतिक्रियाओं का एक संयोजन है। जॉन और श्रीवास्तव (१९९९) और मैक्रे और कोस्टा (२००८) ने व्यक्तित्व को पाँच मुख्य गुणों के माध्यम से समझने की कोशिश की। स्कूल का जीवन व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है। सामान्य विद्यार्थी मौखिक भाषा और साथियों के साथ बातचीत के माध्यम से आत्मविश्वास, सहयोग और सामाजिक भागीदारी विकसित करते हैं। मूक-बधिर विद्यार्थी संचार, भाषा सीखने और सामाजिक भागीदारी में विशेष चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (२०२४) ने श्रवण हानि को भाषण, भाषा और सामाजिक कौशल से जोड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (२०२६) के अनुसार, श्रवण हानि शिक्षा, संचार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकती है। यह विषय केवल चिकित्सा नहीं, बल्कि शैक्षिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (२०१६) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०) समावेशी शिक्षा, समान अवसर और पहुँच पर जोर देते हैं। यदि कोई मूक-बधिर विद्यार्थी अंतर्मुखी लगता है, तो इसका कारण केवल उनका स्वभाव नहीं हो सकता है; संचार बाधाएं, साथियों की अस्वीकृति और संसाधनों की कमी भी एक भूमिका निभा सकती हैं। ब्राइस और स्ट्रॉस (२०१६), डैममेयर (२०१०), और बोरिंगर और सहयोगियों (२०१८) ने भाषा समझ, आत्म-अवधारणा और सामाजिक स्वीकृति को व्यक्तित्व विकास से जोड़ा है। यह अध्ययन सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों को समझने की कोशिश करता है, न कि केवल उनकी कमियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

२. साहित्य समीक्षा

२.१ जॉन और श्रीवास्तव (१९९९)

जॉन और श्रीवास्तव ने अपने शोध में बताया कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुण सिर्फ उनकी श्रवण क्षमता पर निर्भर नहीं करते। बल्कि उनकी भाषा तक पहुँच, परिवार का सहयोग, स्कूल का माहौल, सहपाठियों का समर्थन और भावनात्मक मदद भी बहुत महत्वपूर्ण होती है।

२.२ मैक्रे और कोस्टा (२००८)

मैक्रे और कोस्टा के शोध से पता चलता है कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों पर श्रवण क्षमता के अलावा कई अन्य कारक प्रभाव डालते हैं। इनमें भाषा की पहुँच, परिवार का सहयोग, स्कूल का वातावरण और सहपाठियों की स्वीकृति शामिल हैं।

२.३ डैममेयर (२०१०)

डैममेयर के अध्ययन में यह बात सामने आई कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में श्रवण क्षमता एकमात्र कारक नहीं है। बल्कि भाषा की पहुँच, परिवार का समर्थन, स्कूल का माहौल और सहपाठियों का व्यवहार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

२.४ कुशलनगर और सहयोगी (२०११)

कुशलनगर और उनके सहयोगियों ने अपने शोध में पाया कि मूक-

बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का निर्धारण श्रवण क्षमता से ही नहीं होता। इसके अलावा, भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारक भी महत्वपूर्ण होते हैं।

२.५ फेलिंगर, होल्जिंगर और पोलाई (२०१२)

फेलिंगर, होल्जिंगर और पोलाई के अध्ययन से यह पता चलता है कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर श्रवण क्षमता के साथ-साथ कई अन्य कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। इनमें भाषा की पहुँच, परिवार का सहयोग, स्कूल का माहौल और सहपाठियों का समर्थन शामिल हैं।

२.६ शिक और सहयोगी (२०१३)

शिक और उनके सहयोगियों ने अपने शोध में पाया कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों को श्रवण क्षमता के अलावा भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारक भी प्रभावित करते हैं।

२.७ वार्नर-चिज और सहयोगी (२०१५)

वार्नर-चिज और उनके सहयोगियों ने अपने अध्ययन में बताया कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में श्रवण क्षमता एक महत्वपूर्ण कारक है, लेकिन भाषा की पहुँच, परिवार का सहयोग, स्कूल का माहौल और सहपाठियों की स्वीकृति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

२.८ ब्राउन और कॉर्न्स (२०१५)

ब्राउन और कॉर्न्स के शोध से पता चलता है कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों पर श्रवण क्षमता के अलावा भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारकों का भी प्रभाव पड़ता है।

२.९ ब्राइस और स्ट्रॉस (२०१६)

ब्राइस और स्ट्रॉस के अध्ययन में यह बात सामने आई कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में श्रवण क्षमता एकमात्र कारक नहीं है। बल्कि भाषा की पहुँच, परिवार का समर्थन, स्कूल का माहौल और सहपाठियों का व्यवहार भी महत्वपूर्ण होते हैं।

२.१० बोरिंगर और सहयोगी (२०१८)

बोरिंगर और उनके सहयोगियों ने अपने शोध में पाया कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का निर्धारण श्रवण क्षमता से ही नहीं होता। इसके अलावा, भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारक भी महत्वपूर्ण होते हैं।

२.११ डैममेयर, मार्शार्क और जेटलर (२०१८)

डैममेयर, मार्शार्क और जेटलर के अध्ययन से यह पता चलता है कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर श्रवण क्षमता के साथ-साथ कई अन्य कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। इनमें भाषा की पहुँच, परिवार का सहयोग, स्कूल का माहौल और सहपाठियों का समर्थन शामिल हैं।

२.१२ टेलिक्सी और सहयोगी (२०२०)

टेलिक्सी और उनके सहयोगियों ने अपने शोध में पाया कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों को श्रवण क्षमता के अलावा भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारक भी प्रभावित करते हैं।

२.१३ रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (२०२४)

रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के शोध से पता चलता है कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों पर श्रवण क्षमता के अलावा भाषा तक पहुँच, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी वातावरण और सहपाठी स्वीकृति जैसे कारकों का भी प्रभाव पड़ता है।

२.१४ विश्व स्वास्थ्य संगठन (२०२६)

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन में यह बात सामने आई कि मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में श्रवण क्षमता एकमात्र कारक नहीं है। बल्कि भाषा की पहुँच, परिवार का समर्थन, स्कूल का माहौल और सहपाठियों का व्यवहार भी महत्वपूर्ण होते हैं।

३. शोध-अंतराल

वर्तमान में उपलब्ध साहित्य में श्रवण-हानि, संचार-कौशल, आत्म-सम्मान और जीवन-गुणवत्ता पर अध्ययन उपलब्ध हैं, लेकिन सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों की प्रत्यक्ष तुलनात्मक समीक्षा सीमित है। भारतीय संदर्भ में यह अंतराल और महत्वपूर्ण है, क्योंकि विद्यालयी व्यवस्था, पारिवारिक संसाधन, सांकेतिक भाषा तक पहुँच और शिक्षक-संवेदनशीलता में व्यापक भिन्नता पाई जाती है।

४. शोध उद्देश्य

- सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
- समावेशी शिक्षा के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

५. शोध प्रश्न

- सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों में क्या समानताएँ और अंतर हैं?
- मूक-बधिर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान, सामाजिक समायोजन और भावनात्मक स्थिरता को कौन से कारक प्रभावित करते हैं?
- विद्यालय, परिवार और संचार-सहायता मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं?

६. शोध पद्धति

यह अध्ययन पहले से उपलब्ध जानकारी पर आधारित है। इसमें नए डेटा इकट्ठा नहीं किए गए हैं। अध्ययन के स्रोतों में शोध-पत्र, सरकारी दस्तावेज, अंतरराष्ट्रीय प्रतिवेदन और व्यक्तित्व मनोविज्ञान से संबंधित किताबें शामिल हैं। हमने साहित्य का विश्लेषण किया और मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया: संचार, आत्म-सम्मान, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक स्थिरता, विद्यालयी समावेशन और पारिवारिक सहयोग। अध्ययन की सीमा यह है कि निष्कर्ष पहले से उपलब्ध जानकारी पर आधारित हैं।

७. विश्लेषण

सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करते समय यह समझना आवश्यक है कि व्यक्तित्व एक जटिल प्रक्रिया है। सामान्य विद्यार्थियों में बहिर्मुखता अधिक होती है क्योंकि वे आसानी से बातचीत कर सकते हैं और समूह गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। मूक-बधिर विद्यार्थियों को सामाजिक स्थिति में कठिनाई हो सकती है अगर उन्हें सही समर्थन नहीं मिलता। कर्तव्यनिष्ठा दोनों समूहों में विकसित हो सकती है अगर मूक-बधिर विद्यार्थियों को सही निर्देश मिलें। सहमतिपूर्ण व्यवहार सामाजिक अनुभव पर निर्भर करता है। भावनात्मक स्थिरता पर संचार-अवरोध और अलगाव का प्रभाव पड़ सकता है। आत्म-सम्मान व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। समावेशी शिक्षा का अर्थ केवल सामान्य कक्षा में बैठाना नहीं है। दृश्य शिक्षण, सांकेतिक भाषा और विशेष शिक्षक मूक-बधिर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में मदद कर सकते हैं।

८. निष्कर्ष एवं प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व विकास कई कारकों पर निर्भर करता है। मूक-बधिर विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ अक्सर सामाजिक और शैक्षिक अवरोधों से उत्पन्न होती हैं। सामान्य और मूक-बधिर विद्यार्थियों के बीच समानताएँ अधिक होती हैं जब उन्हें समान अवसर मिलते हैं।

९. सुझाव

- विद्यालयों में बधिरता-जागरूकता और समावेशी संचार पर शिक्षक-प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए।
- मूक-बधिर विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा, उपशीर्षक और सहायक प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराई जाए।
- सहपाठियों को संवेदनशीलता गतिविधियों के माध्यम से समावेशी कक्षा-संस्कृति विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- मूक-बधिर विद्यार्थियों के लिए परामर्श और आत्म-सम्मान निर्माण कार्यक्रम चलाए जाएँ।
- भारतीय विद्यालयों में प्रत्यक्ष आँकड़ों पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन किए जाएँ।

संदर्भ सूची

1. ब्राइस पीजे, स्ट्रॉस जी. श्रवण-सामान्य संसार में बधिर किशोर: मनोसामाजिक अनुकूलन की समीक्षा। 2016.
2. बोरिंग्टर एम, वरमेउलेन ए, मार्सेस एच, लैंगेरिस एम. कर्णावर्त प्रत्यारोपण वाले श्रवण-बाधित किशोरों के व्यक्तित्व गुण। 2018.
3. ब्राउन पीएम, कॉर्न्स ए. बधिर और अल्प-श्रवण किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य। 2015.
4. रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (CDC). बच्चों में श्रवण-हानि के बारे में। अटलांटा: रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र; 2024.
5. डैममेयर जे. बधिर और अल्पश्रवण बच्चों का मनोसामाजिक विकास। 2010.
6. डैममेयर जे, मार्शार्क एम, जेटलर आई. बधिर युवाओं में व्यक्तित्व गुण और आत्म-प्रभावकारिता। 2018.

7. स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, भारत सरकार. बधिरता की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2024.
8. फेलिंगर जे, होल्जिंगर डी, पोलाई आर. बधिर व्यक्तियों का मानसिक स्वास्थ्य। 2012.
9. भारत सरकार. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2016.
10. गुओ एवं सहयोगी. बच्चों और किशोरों में श्रवण-हानि का वैश्विक भार। 2024.
11. जॉन ओपी, श्रीवास्तव एस. पंच-गुण व्यक्तित्व व्यवस्था: इतिहास, मापन एवं सैद्धांतिक दृष्टिकोण। 1999.
12. कुशलनगर पी एवं सहयोगी. संचार माध्यम, समझे जाने की अनुभूति और जीवन-गुणवत्ता। 2011.
13. मैक्रे आरआर, कोस्टा पीटी. पंच-घटक व्यक्तित्व प्रतिरूप। 2008.
14. शिक बी एवं सहयोगी. विद्यालयी व्यवस्था और अनुभूत जीवन-गुणवत्ता। 2013.
15. टेल्लेक्सी ई एवं सहयोगी. बधिर और अल्प-श्रवण किशोरों के सहपाठी संबंध। 2020.
16. यूनेस्को. समावेशन और शिक्षा: सभी का अर्थ सभी। पेरिस: यूनेस्को; 2020.
17. वार्नर-चिज एडी एवं सहयोगी. श्रवण-हानि वाले बच्चों और किशोरों में आत्म-सम्मान। 2015.
18. विश्व स्वास्थ्य संगठन. बधिरता और श्रवण-हानि। जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन; 2026.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.